JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

अजंता की चित्रकला में बौद्ध जातक कथाओं का अंकन

प्रहलाद
शोधार्थी
प्राचीन भारतीय इतिहास एवं पुरातत्व विभाग
लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ
ई-मेल – rawatprahalad2@gmail.com

सारांश

अजंता की गुफाएं भारतीय कला और सांस्कृतिक धरोहर का अनमोल अध्याय है। दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व से पांचवी शताब्दी ईसा पूर्व तक निर्मित ये गुफाएं बौद्ध विहार और चैत्य ग्रहों के रूप में जानी जाती हैं। जहां बौद्ध धर्म के सिद्धांतों और जीवन मूल्यों को भित्तिचित्रों के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। इनमें बौद्ध जातक कथाओं का अंकन विशेष है। गौतम बुद्ध के पूर्व जन्मों की कथाएं जातक कथाएं हैं। यह शोध पत्र अजंता की चित्रकला में इन कथाओं के अंकन का विश्लेषण करता है, जो जातक कथाओं को दृश्य माध्यम से प्रदर्शित करतीं हैं। अजंता के चित्र न केवल धार्मिक अपितु सांस्कृतिक, सामाजिक और कलात्मक स्तर से भी गहन महत्व के हैं। अध्ययन में गुणात्मक–विश्लेषात्मक पद्धति अपनाई गई है। जिसमें भित्तिचित्रों की संरचना, रंग–रेखाओं और भाव अभिव्यक्ति का अवलोकन, चित्रित जातकों का विषयगत अध्ययन तथा बौद्ध ग्रंथों एवं पूर्ववर्ती कला–ऐतिहासिक साहित्य का सहारा लिया गया है। अजंता में चित्रित जातकों के चित्र बहु–स्तरीय भूमिका निभाते हैं। ये चित्र धार्मिक शिक्षा और प्रेरणा के साधक तो हैं ही साथ तत्कालीन सामाजिक–आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक जीवन का भी दृश्य प्रस्तुत करते हैं। इन चित्रों में आभूषण–शैली, वस्त्र–विन्यास, स्थापत्य और दरबारी जीवन के अंकन से हमें तत्कालीन भारतीय सभ्यता की सजीव तस्वीर देखने को मिलती है। साथ ही साथ इन भित्तिचित्रों की कलात्मकता भारतीय कला की सार्वभौमिकता और बौद्ध धर्म के मूल्यों की सार्वजनिक प्रासंगिकता को भी रेखांकित करती है। अजंता की कला महायान बौद्ध सम्प्रदाय से प्रभावित है, जहां बोधिसत्व की अवधारणा प्रमुख है। महिलाओं का चित्रण प्राचीन समाज में उनकी भूमिका दर्शाता है। समय के साथ ही इन चित्रों में क्षरण हुआ, फिर भी ये वैश्विक बौद्ध कला को प्रभावित करती है।

बीज शब्द– अजंता, जातक, विहार, भित्तिचित्र, भारतीय कला।

प्रस्तावना

भारतीय कला एवं संस्कृति के क्षेत्र में अजंता की गुफाएं अद्वितीय हैं। यहां के भित्तिचित्र केवल सौंदर्यबोध के ही नहीं, बल्कि मानवीय संवेदना, आस्था, दर्शन के भी उत्कृष्ट उदाहरण हैं। बौद्ध जातक कथाओं का अंकन अजंता की चित्रकला को विशेष बनाता है। जातक कथाएं जो बुद्ध के पूर्वजन्मों के विविध प्रसंगों को प्रस्तुत करतीं हैं, प्रमुख रूप से करुणा, त्याग, दया एवं मानवता जैसे सार्वभौमिक मूल्यों की अभिव्यक्ति है। बहुत ही कुशल कलाकारों द्वारा निर्मित ये गुफाएं केवल धार्मिक परिप्रेक्ष्य को ही नहीं, अपितु जीवंत मानव अनुभवों और सामाजिक पहलुओं को भी रेखांकित करती है। चित्रों में राजदरबार का वैभव, आम जन–मनसा का जीवन, स्त्रियों का अंकन, प्राकृतिक चित्रण एवं आध्यात्मिक चेतना का सम्मिश्रण मिलता है। अजंता की चित्रकला जहां एक ओर धर्मोपदेश एवं लोक शिक्षा का माध्यम है तो दूसरी ओर भारतीय समाज–संस्कृति का दृश्य दस्तावेज भी है।

शोध की दृष्टि से अजंता की चित्रकला बहुआयामी अध्ययन का विषय है। यह केवल कलात्मकता का ही द्योतक नहीं, अपितु अन्य कई पहलुओं जैसे धर्म, दर्शन, साहित्य, इतिहास आदि की व्याख्या के लिए भी महत्वपूर्ण है। जातक कथाओं

के माध्यम से यहां की कला प्रदर्शित करती है कि केवल पूजा या अनुष्ठान से धर्म का आशय नहीं है, अपितु मानवीय जीवन के नैतिक आदर्शों एवं व्यवहारिक मूल्यों का संबंध भी धर्म से ही है। इसी संदर्भ में प्रस्तुत शोधपत्र में अजंता की चित्रकला में बौद्ध जातक कथाओं के अंकन का गहनता से विश्लेषण किया गया है। इसमें ऐतिहासिक–सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य, जातकों की महत्ता, चित्रित प्रमुख कथाएं, कलात्मक और तकनीकी विशेषताएं, समाज एवं संस्कृति का परावर्तन इत्यादि पर चर्चा की गई है।

अजंता गुफाएं परिचय एवं ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

महाराष्ट्र राज्य के औरंगाबाद में सह्याद्रि पर्वत श्रृंखला कि एक घाटी में स्थित अजंता की गुफाएं विश्व विरासत स्थल के रूप में विख्यात है। वाघोरा नदी के किनारे लगभग 30 गुफाओं का यह समूह बौद्ध धर्म की कला, स्थापत्य और जीवन दर्शन का जीवंत उदाहरण प्रस्तुत करता है। इन गुफाओं में चैत्यगृह एवं विहार दोनों प्रकार की गुफाएं प्राप्त हुई हैं।

चित्रों का निर्माण गुफाओं की दीवारों पर किया गया है। इन गुफाओं का निर्माण कार्य पांच राजवंशों – आंध्र सातवाहन, चालुक्य, वाकाटक, कुषाण एवं गुप्तकाल में हुआ। सबसे प्राचीन चित्र गुफा संख्या 9, 10 के ज्ञात होते हैं, जिनका निर्माण दक्षिण के आंध्र सातवाहन राजाओं के संरक्षण में हुआ। वाचस्पति गौरेला ने अपनी पुस्तक 'भारतीय चित्रकला' में अजंता के चित्रों को तीन भागों – अलंकारिक, रूप भैदिक एवं जातक कथाओं के चित्रों में विभक्त किया है। इस शोध पत्र में गुफाओं में चित्रित जातक कथाओं के चित्रों की चर्चा की जा रही है।

जातक कथाएं स्वरूप एवं महत्त्व

बौद्ध साहित्य के अंतर्गत जातकों का विशेष महत्व है। जातक कथाएं सुत्तपिटक के खुद्दकनिकाय का दसवां भाग है। जातक शब्द 'जन' धातु में 'क्त' प्रत्यय जोड़कर बनता है, जिसका अर्थ है, जातभूत कथा अर्थात जन्म के पूर्व की कथा। जातक गौतम बुद्ध के पूर्व जन्मों की कथाएं हैं, इनकी संख्या लगभग 550 तक है। इन कथाओं के माध्यम से यह दर्शाया गया है कि तथागत बुद्ध में अपने पूर्व जन्मों में करुणा, दान, सत्य, तप, त्याग एवं सहिष्णुता जैसे गुणों को निरंतर धारण किया, जिसके फलस्वरूप अन्ततः उन्हें बुद्धत्व की प्राप्ति हुई। इन कथाओं के विषय अत्यंत व्यापक एवं बहुआयामी है। जिनमें बोधिसत्व कभी राजा, कभी व्यापारी, कभी पशु–पक्षी या ऋषि के रूप में वर्णित हैं। प्रत्येक कथा किसी नैतिक शिक्षा और आदर्श को प्रदर्शित करती है। जातक केवल धार्मिक आख्यान नहीं, अपितु मानवीय मूल्यों की सार्वजनिक शिक्षाएं हैं।

जातक के माध्यम से तत्कालीन सामाजिक, आर्थिक राजनीतिक जीवन के विषय में भी जानकारी मिलती है। प्रसिद्ध नगरों को मिलने वाले मार्गों, जल मार्गों, व्यापार का विवरण, प्रमुख शैक्षणिक स्थल आदि के विषय में भी जानकारी हमें जातकों से प्राप्त होती है।

अजंता गुफाओं में अंकित जातक कथाएं

अजंता से तीस गुफाएं प्राप्त हुई है जिनमें से पच्चीस गुफाओं का उपयोग विहार के रूप में किया जाता था और 5 गुफाएं चैत्य ग्रह हैं। हालांकि तीस में से एक गुफा पूर्ण रूप से निर्मित नहीं है। इन गुफाओं में जातक कथाओं का चित्रण बहुत ही कुशलता से हुआ है। कलात्मक दृष्टि से अजंता की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यहां धार्मिक आख्यानों को यथार्थ परक जीवन से जोड़ दिया गया। कलाकारों ने जातक कथाओं को अंकित करते समय केवल प्रतीकात्मक चित्रण नहीं किया, बल्कि उन कथाओं में उपस्थित पात्रों, स्थानों, वस्त्रों को तत्कालीन समाज के अनुरूप बनाया। परिणामस्वरूप ये चित्र केवल धार्मिक शिक्षा ही नहीं देते, बल्कि उस समय के सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन का सजीव दस्तावेज भी बन जाते हैं। इन चित्रों में खनिज रंगों द्वारा चित्रण हुआ है, जिसमें सफेद, लाल, पीला, भूरा, नीला और हरे रंगों का प्रमुखता से प्रयोग दिखाई देता है।

गुफा संख्या 1 – गुफा के मुख्य द्वार से प्रवेश करने पर बायीं ओर दीवार पर शिवी जातक की कथा का चित्रण है। जिसमें बोधिसत्व जो राजा शिवी के रूप में हैं, एक कबूतर की रक्षा के लिए, बाज को कबूतर के बराबर मांस अपने शरीर से देने के लिए तैयार हो गए थे। चित्र के बायीं ओर कबूतर राजा के जांघ पर बैठा है और दायीं ओर एक तराजू के निकट रहा शिवी हैं। अगला चित्र महाजनक जातक से है, जो गुफा के बायीं भित्ति पर अंकित है। यह चित्र अनेक टुकड़ों में बना है,

जिसमें राजकुमार महाजनक का अपनी मां से विचार–विमर्श, उनके चारों ओर विभिन्न मुद्राओं में अंकित परिचारिकाएं, नृत्य वादन का दृश्य, मध्य में मुकुट युक्त नर्तकी, परिपार्श्व में गायिकाएं वाद्य–यंत्र बजती हुई, सेना का जुलूस, जैतवन का दृश्य, सन्यासी की प्रवचन मुद्रा तथा सेना द्वारा समुद्र पार करने एवं नौकाएं टूटने का दृश्य। नागराज शंखपाल जातक से सम्बन्धित चित्र में प्रवचन सुनती हुई स्त्री की तरक का चित्रण है। दाहिनी दीवार पर चम्पेय जातक की कथा का अंकन है, जिसमें ऊपर नागराज का दरबार, उसकी दायीं ओर वाराणसी का दरबार, सपेरे के खेल का दृश्य वो नागराज की पत्नी की प्रार्थना का दृश्य, नीचे नाग लोक का दृश्य अंकित है।

गुफा संख्या 2 – महाहंस जातक के भित्तिचित्र गुफा में दाहिनी ओर हैं। जिसमें बोधिसत्व हंस के रूप में बनारस के राजा वी रानी को धर्मोपदेश से रहे हैं। एक चित्र क्षान्तिवादी जातक से है, जिनके अनुसार बोधिसत्व क्षान्तिवादी मुनि के रूप में हैं। राजा द्वारा क्षान्तिवादी एवं नर्तकी के वध की आज्ञा दी गयी है। गुफा में अंकित चित्रानुसार, राजा हाथ में तलवार लिए सिंहासन पर विराजमान हैं और नर्तकी उनसे क्षमा–याचना कर रही है। कलाकार ने चित्र में सजीवता प्रतिरोपित करने का प्रयत्न किया है, जिसमें वह सफल भी हुआ।

गुफा संख्या 10 – दसवीं गुफा एक प्राचीनतम चैत्य गृह है, जिसे आंध्र सातवाहन काल में ईसा से 200 वर्ष पूर्व बनाया गया था। इस गुफा में दो भिन्न कालों में चित्रण हुआ है, जिसमें जातकों का चित्रण पहले आता है। छदंत जातक का चित्रण यहां हुआ है। चित्रकार ने हाथियों को जलक्रीड़ा करते दर्शाया है, साथ ही कई वृक्षों का अंकन भी है। छदंत नामक हाथी जो बोधिसत्व है, अपनी हथिनियों को सूंड से कमल के पुष्प दे रहें है। दूसरी ओर एक व्याघ्र का प्रवेश हो रहा है, छदंत स्वयं समर्पण करते हुए चित्रित हैं। दूसरे दृश्य में व्याघ्र को काशी नरेश के महल में जाते दिखाया गया है, रानी सुभद्रा छदंत के दांतों को काट लाने की आज्ञा दें रहीं हैं इत्यादि। इसी गुफा में साम जातक का अंकन है। जिसकी कथा श्रवण कुमार की कथा से साम्यता रखती है। चित्र में काले वर्ण वाले युवक श्याम को काशी नरेश द्वारा बाण मारने का दृ श्य है। इस कथा में माता–पिता के विलाप के कारण किसी दैवीय शक्ति द्वारा श्याम को पुनर्जीवित कर दिया जाता है। कंधे पर घड़ा लिए श्याम की आकृति है, माता–पिता की आकृति वेदना से युक्त है, भागते हिरण का भी अंकन है।

गुफा संख्या 11 – ग्यारहवीं गुफा में हस्ति जातक का अंकन है। कथानुसार बोधिसत्व जो किसी पूर्व जन्म में हाथी के रूप में थे, अपने दयालु भाव के कारण भूखे यात्रियों की भूख मिटाने के लिए स्वयं मृत्यु का वरण करते हैं।

गुफा संख्या 16 – इस गुफा में भी हस्ति जातक का चित्रण मिलता है। चित्र के अनुसार भूखे यात्री पहाड़ी पर खड़े श्वेत हाथी को देख रहे हैं। दूसरे दृश्य में हाथी को मृत दिखाया है, दो यात्री चाकू से मांस निकाल रहें हैं, कुछ मांस भून रहें हैं और कुछ झील से पानी ला रहे है। इसी गुफा में महाउम्मग्ग जातक की कथा का चित्रण है। इस जातक में महोसंघ नामक एक दैवीय बालक द्वारा गंभीर विवादों का बुद्धिमत्तापूर्वक समाधान किया जाता है।

गुफा संख्या 17 – सत्रहवीं गुफा से जातक के अधिक चित्र पाएं गए हैं। मातृपोषक जातक जिसमें बुद्ध एक श्वेत हाथी के रूप में हैं, को पकड़कर काशी नरेश के पास लाया जाता है। परन्तु जब काशी नरेश को ज्ञात होता है कि श्वेत हाथी की मां ने पुत्र वियोग में दाना–पानी त्याग दिया है, अतः राजा उसे मुक्त कर देतें हैं। इस कथा के अंकन में श्वेत हाथी का अपनी मां से पुनः मिलन का दृश्य बहुत ही मार्मिक है। हस्ति जातक का दृश्य पूर्व में वर्णित गुफा संख्या 16 की ही भांति है। किंतु यहां एक झरोखें में ऊपर गहरे गुलाबी रंग से डेढ़ पंक्ति का लेख भी प्राप्त हुआ है।

एक और कथा का चित्रण जो कि वेसन्तर जातक से है। चित्र में बोधिसत्व राजा को भावपूर्ण हस्त मुद्रा धारण किए हुए आसन पर बैठा दिखाया गया है, एक भिक्षु भिक्षा के लिए याचना कर रहा है, वह भिक्षा में राजकुमार को मांग रहा है जिससे सभा चकित है। अगले दृश्य में राजकुमार सबसे विदा ले रहें हैं, सभा शोक में डूबी है। इस दृश्य का अंकन बहुत मार्मिक है। एक अन्य दृश्य में कुमार रथ में सवार हुए नगर से जा रहें हैं, अगले दृश्य में रथ भिक्षुओं को सौंप कर पैदल आगे बढ़ रहें हैं। वेसन्तर जातक के इस चित्रण में हस्त व नेत्रों के भाव उल्लेखनीय हैं, भिक्षु का चित्रण अत्यंत उत्कृष्ट ढंग से हुआ है। एक अन्य चित्र जो महाहंस जातक की कथा है, दो दृश्यों में प्रदर्शित है। पहला दृश्य जिसमें बहेलियां हंसों को पकड़ रहा है जिससे सभी हंस आतंकित हैं, अगले दृश्य में हंस सिंहासन पर विराजमान है और राजा–रानी को उपदेश दे रहा है। यह चित्र अपने वर्णविधान के कारण विश्वविख्यात है।

महाकपि जातक की कथा में गंगा के तट पर एक आम के वे वृक्ष पर बंदरों का समूह रहता है, आम की लालसा में काशी नरेश सैनिकों के साथ वहां पहुंच जाते हैं, जिससे सभी बंदर भयभीत हो जाते हैं। अन्य बंदरों की रक्षा के लिए बोधिसत्व रूपी बंदर दो पेड़ों के बीच इस प्रकार लटक जाते हैं जिससे अन्य बंदर उनकी पीठ को माध्यम बना कर आगे बढ़ जाते हैं। परन्तु देवदत्त रूपी बंदर बोधिसत्व को चोट पहुंचा देता है। राजा बोधिसत्व का उपचार करवाता है और बोधिसत्व राजा को धर्मोपदेश देतें हैं। अगली कथा सिंहलवदान कथा हैं, जिसमें सिंहल नामक एक व्यापारी अपने साथियों के साथ व्यापार हेतु निकलता है, परन्तु समुद्री तूफान के कारण सबकुछ नष्ट हो जाता है। सभी ताम्रद्वीप पर पहुंचते हैं जहां नरभक्षी राक्षसी सभी को मार देती है, परंतु बोधिसत्व रूपी श्वेत घोड़े के कारण सिंहल बच जाता है और द्वीप का नाम सिंहलद्वीप हो जाता है। एक अन्य कथा मृग जातक से है जिसमें एक सुनहरी मृग एक व्यापारी को आत्महत्या करने से बचाता है और शर्त रखता है कि व्यापारी उसके विषय में नगर में किसी को न बताये। परन्तु धन की लालसा में वह राजा को मृग के बारे में बता देता है। जब राजा को पता चलता है कि व्यापारी में मृग से विश्वासघात किया है, तो वह व्यापारी को दंड देना चाहता है परंतु मृग क्षमा–याचना करके राजा को व्यापारी को माफ करने के लिए कहता है, सुनहरी मृग बोधिसत्व हैं।

इस गुफा में चित्रित अन्य जातकों में महासेतुसोम जातक, छदंत जातक, शिवी जातक, साम जातक, महिप जातक एवं मच्छ जातक की कथाओं का चित्रण मिलता है।

अजंता चित्रकला की कलात्मक विशेषता एवं शैलीगत मूल्यांकन

अजंता की गुफाएँ भारतीय कला और संस्कृति की ऐसी धरोहर हैं, जिनमें धर्म, दर्शन और सौंदर्यबोध का अनुपम संगम दिखाई देता है। इन गुफाओं की भित्ति चित्रकला केवल चित्रण की दृष्टि से ही महत्त्वपूर्ण नहीं है, बल्कि यह मानवीय संवेदनाओं, सामाजिक मूल्यों और आध्यात्मिक आदर्शों को मूर्त रूप देने का अद्वितीय प्रयास भी है। विशेषकर जातक कथाओं के अंकन ने इन चित्रों को और अधिक जीवंत और प्रभावशाली बना दिया है, क्योंकि इनके माध्यम से कलाकार ने कथा–वाचन को दृश्यात्मक स्वरूप प्रदान करते हुए नैतिक आदर्शों को जनमानस तक पहुँचाया। अजंता की चित्रकला का सबसे उल्लेखनीय गुण उसकी भावाभिव्यक्ति की अद्भुत सजीवता है। पात्रों की आँखों में झलकती करुणा, चेहरे पर अंकित त्याग और दृढ़ता, तथा देहभाषा में प्रकट होता संकल्प चित्रों को केवल स्थिर आकृतियों का समूह नहीं रहने देता, बल्कि उन्हें जीवंत संवाद का रूप प्रदान करता है। शिबि जातक का चित्रण इसका उत्कृष्ट उदाहरण है, जहाँ राजा शिबि के मुखमंडल पर करुणा और न्यायप्रियता का ऐसा सम्मिश्रण उभरता है, जो कथा के नैतिक संदेश को तत्काल संप्रेषित कर देता है। इसी प्रकार वेसन्तर जातक के दृश्य में त्याग और दानशीलता की भावना पात्रों की मुद्रा और मुखाभिव्यक्ति से इस प्रकार झलकती है कि दर्शक सहज ही कथा के भावों से जुड़ जाता है।

शैलीगत दृष्टि से अजंता की चित्रकला अत्यंत परिष्कृत और व्यवस्थित प्रतीत होती है। रेखाओं का प्रवाह लयात्मक और स्वाभाविक है, जो आकृतियों में गति और जीवन का संचार करता है। पात्र स्थिर दिखाई देने पर भी उनमें आंतरिक गति और जीवंतता का आभास होता है। रंग–प्रयोग भी उतना ही महत्त्वपूर्ण है। यहाँ प्रयुक्त रंग प्राकृतिक खनिजों और वनस्पतियों से निर्मित थे, जिनकी आभा और गहनता आज भी विस्मय उत्पन्न करती है। लाल, हरे, नीले और भूरे रंगों के सामंजस्यपूर्ण प्रयोग से न केवल सौंदर्य का सृजन हुआ है, बल्कि भावात्मक गहराई भी विकसित हुई है। महाजनक जातक का समुद्र–यात्रा दृश्य इसका उत्कृष्ट उदाहरण है, जहाँ गहरे नीले और भूरे रंगों का संयोजन समुद्री लहरों और जहाज की गति को अत्यंत यथार्थपरक बना देता है। रचना–प्रणाली की दृष्टि से भी अजंता की चित्रकला असाधारण है। एक ही भित्तिचित्र में अनेक घटनाओं और पात्रों का संयोजन इस प्रकार किया गया है कि कथा की संपूर्णता सहज ही उद्घाटित हो जाती है। कलाकार ने कथानक के विविध प्रसंगों को एक ही पट पर संयोजित करके चित्र को दृश्यात्मक काव्य का रूप प्रदान किया। यह तकनीकी निपुणता न केवल कलाकार की कल्पनाशक्ति को प्रमाणित करती है, बल्कि उस युग की कलात्मक प्रगति का भी द्योतक है।

अजंता की चित्रकला का सबसे बड़ा आकर्षण आदर्शवाद और यथार्थवाद का सामंजस्य है। एक ओर पात्रों की आकृतियाँ आदर्श रूप से सुंदर और सौम्य हैं, जो बौद्ध धर्म के आध्यात्मिक आदर्शों का प्रतिनिधित्व करती हैं वहीं दूसरी ओर उनके हावभाव, मुद्राएँ और परिवेश जीवन के यथार्थ से गहराई से जुड़े हुए प्रतीत होते हैं। यह द्वैत उनके चित्रण को केवल धार्मिक प्रतीक नहीं रहने देता, बल्कि मानवीय जीवन के जीवंत दस्तावेज में रूपांतरित कर देता है। इसी कारण अजंता की चित्रकला कालजयी सिद्ध हुई है और शताब्दियों बाद भी अपनी प्रासंगिकता बनाए हुए है। इन चित्रों का कलात्मक मूल्यांकन करते समय यह तथ्य विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि यहाँ कला और धर्म का अद्भुत समन्वय हुआ है। जातक कथाएँ, जो मूलतः नैतिक और आध्यात्मिक शिक्षा के साधन थीं, अजंता में कलाकारों के हाथों ऐसे दृश्य रूप में ढलीं कि वे सामान्य जनमानस तक सहज और आकर्षक ढंग से पहुँच सकीं। यह चित्रकला मात्र सौंदर्य की अभिव्यक्ति

नहीं, बल्कि जीवन–दर्शन का दृश्य रूप है। इसमें करुणा, त्याग, मैत्री और सहिष्णुता जैसे बौद्ध आदर्श कलात्मकता के माध्यम से सजीव हो उठते हैं।

अतः यह कहा जा सकता है कि अजंता की चित्रकला भारतीय कला परंपरा की शिखर उपलब्धि है। इसकी विशेषताओं में भावाभिव्यक्ति की गहनता, रेखांकन की लयात्मकता, रंगों की दीर्घजीविता, रचना की संतुलित संरचना और आदर्शवाद–यथार्थवाद का अद्वितीय संतुलन सम्मिलित है। जातक कथाओं के चित्रण ने इन गुणों को और भी सशक्त बनाया है, क्योंकि इनके माध्यम से कलाकार ने न केवल धार्मिक शिक्षाओं को प्रचारित किया, बल्कि मानवीय संवेदनाओं को भी अमर कर दिया। यही कारण है कि अजंता की कला आज भी विश्व सांस्कृतिक धरोहर के रूप में सम्मानित है और आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का अक्षय स्रोत बनी हुई है।

निष्कर्ष

अजंता की चित्रकला भारतीय कला–विरासत का वह स्वर्णिम अध्याय है, जिसने सौंदर्य, अध्यात्म और मानवीय मूल्यों को अद्वितीय समन्वय प्रदान किया। इन गुफाओं में अंकित बौद्ध जातक कथाएँ केवल धार्मिक आख्यान भर नहीं हैं, बल्कि वे उस युग के सामाजिक सरोकारों, नैतिक आदर्शों और दार्शनिक चिंतन की भी सजीव अभिव्यक्ति हैं। कलाकारों ने अपनी अद्भुत कल्पनाशक्ति और तकनीकी दक्षता के माध्यम से कथा–वस्तु को दृश्यात्मक अनुभव में रूपांतरित किया, जिससे चित्र न केवल दर्शनीय बने, बल्कि शिक्षाप्रद और प्रेरणादायी भी सिद्ध हुए। इन भित्तिचित्रों में भावाभिव्यक्ति की जीवंतता, रेखाओं का लयात्मक प्रवाह, रंगों की दीर्घजीविता और रचना की संतुलित संरचना ये सभी तत्व इस कला को विश्व–स्तरीय बनाते हैं। महाजनक जातक का समुद्र–यात्रा दृश्य, शिबि जातक की करुणा और त्याग की झलक तथा वेसन्तर जातक की दानशीलता ये सभी प्रसंग स्पष्ट करते हैं कि कलाकार ने आदर्श और यथार्थ के संतुलन के माध्यम से न केवल बौद्ध धर्म के सिद्धांतों को अभिव्यक्त किया, बल्कि मानवीय संवेदनाओं को भी शाश्वत बना दिया।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि अजंता की चित्रकला धर्म और कला का अनुपम संगम है, जिसने भारतीय संस्कृति को वैश्विक स्तर पर गौरव दिलाया। यह धरोहर आज भी न केवल अपने सौंदर्य और तकनीकी पूर्णता के लिए प्रशंसनीय है, बल्कि मानवीय आदर्शों और नैतिक मूल्यों की अमर अभिव्यक्ति होने के कारण प्रासंगिक भी है। वास्तव में, अजंता की भित्तिचित्रकला ने सिद्ध किया कि कला केवल अलंकरण का साधन नहीं, बल्कि मानव जीवन के गहनतम सत्य और मूल्यों का दर्पण है।

सूची–संदर्भ

गैरोला, वाचस्पति.(1963). *भारतीय चित्रकला,* इलाहाबादः मित्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड.

दास, कुसुम.(1977). *भारतीय कला परिचय,* लखनऊः उत्तर प्रदेश हिंदी ग्रन्थ अकादमी.

यादव, एम.(2018). अजंता की चित्रकला. *IJSRSET, 4*(8).

प्रताप (वैश्य), रीता.(2020). *भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास,* जयपुर राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी.

Dubey, S.(2022). Buddhist marking in the Satvahana of Ajanta. *Research hub international multidisciplinary research journal, 9*(1), 50-54.

Dubey, S.(2022). Buddhist notation in the Vakataka frescoes of Ajanta. *Research review international journal of multidisciplinary, 7*(2),12-16.

Dubey, S.(2022). Buddhist markings in the post-vakataka murals of Ajanta. *Research review international journal of multidisciplinary*, *6*(12), 164-168.

Kumar, P.(2015). Study of Jataka stories as a source of Indian history. *IRJMSH, 6*(8).